



Exotic 301



Exotic 302



Exotic 303



Exotic 304



Exotic 305



Exotic 306

S4UTM
by
SHIVALI

Exotic
LOVELY & LAVISH VOL: 03

S4UTM
SHIVALI



Exotic 302

S4U
by
SHIVALI



Exotic 305



Exotic 301



Exotic 302



Exotic 303



Exotic 304



Exotic 305



Exotic 306

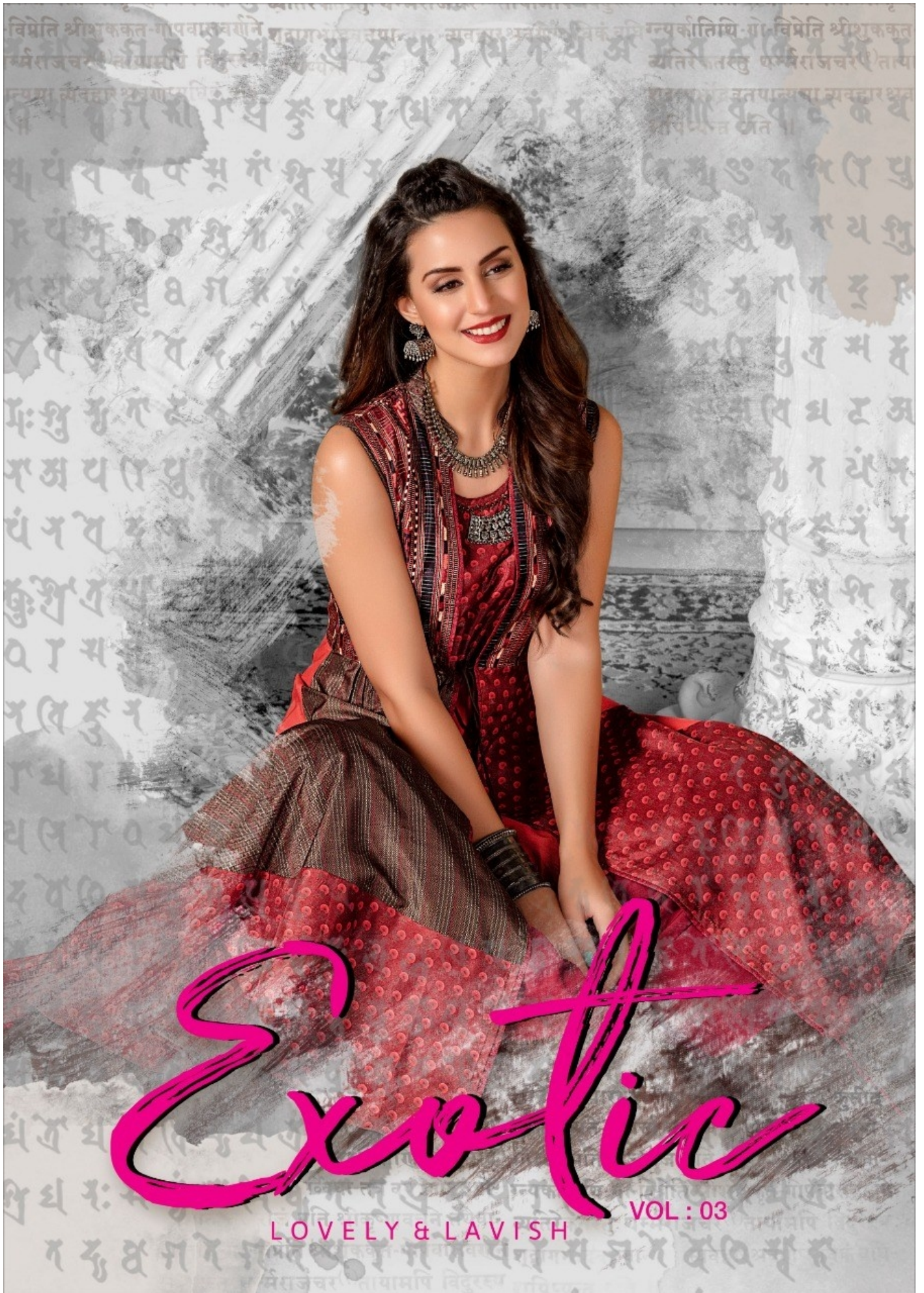
S4UTM
by
SHIVALI

Exotic
LOVELY & LAVISH VOL: 03

S4U
by
SHIVALI



Exotic 301



LOVELY & LAVISH

VOL : 03

S4U
SHIVALI



Exotic 306

रन्ध्रः "कृषिभारद्वयं
। वार्तां चतुर्विधा तत्र
ब्रजराजं प्रति श्रीकृष्णवचने तथैवा-
गो-विप्रेति श्रीशककन-गोपवासवर्गिने



S4UTM
by
SHIVALI

Exotic 303

S4U
by
SHIVALI



Exotic 305



S4UTM
by
SHIVALI

Exotic 303

S4UTM
by
SHIVALI

Exotic 304

श्रीशुककृत-गोपवासवशोने
नचर^(१)तायामपि विदुरस्य जीवे^(२)दित्यारभ्यः
आत्रहारश्रवणोप्यधिकं वशि-तुर्गपुज्यते । वालि-वतुविद्वान् वनं य-गोवन्क-
षे गोरक्ष्य वाणिज्यं कुसीदं निशामिति वज्रवज्र-पुत्रो
पुनिवधा तत्र वयं गोवृत्तयो-

S4U
SHIVANI



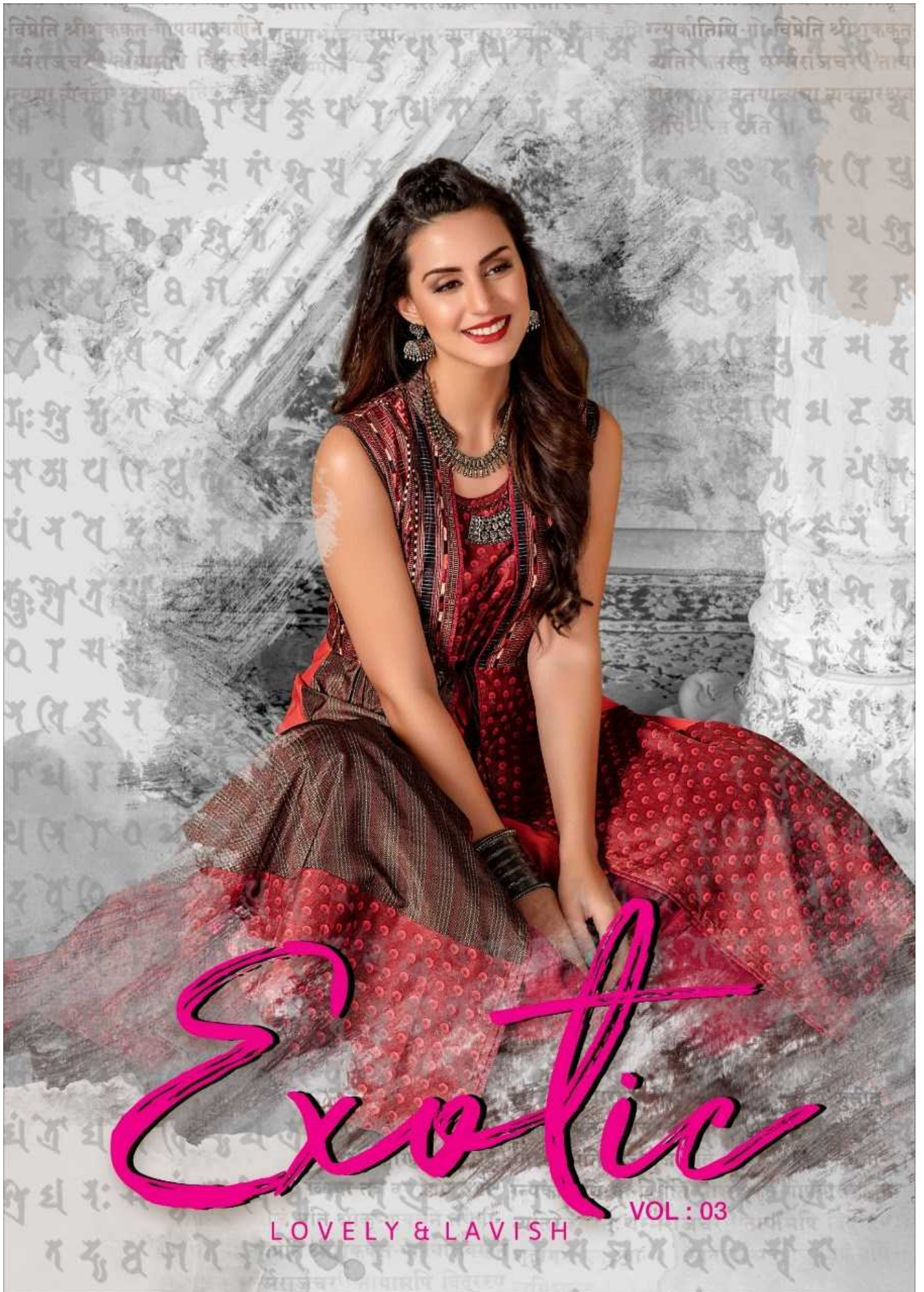
Exotic 306

संन्यः "कृषिभारद्वयं
। यार्तां चतुर्विधा तत्र य
ब्रजराजं प्रति श्रीकृष्णवचने तथेवा- तु
गो-विन्देति श्रीभाकजन-गोपदासवर्णिने

S4U
by
SHIVALI



Exotic 301



Exotic

LOVELY & LAVISH

VOL : 03

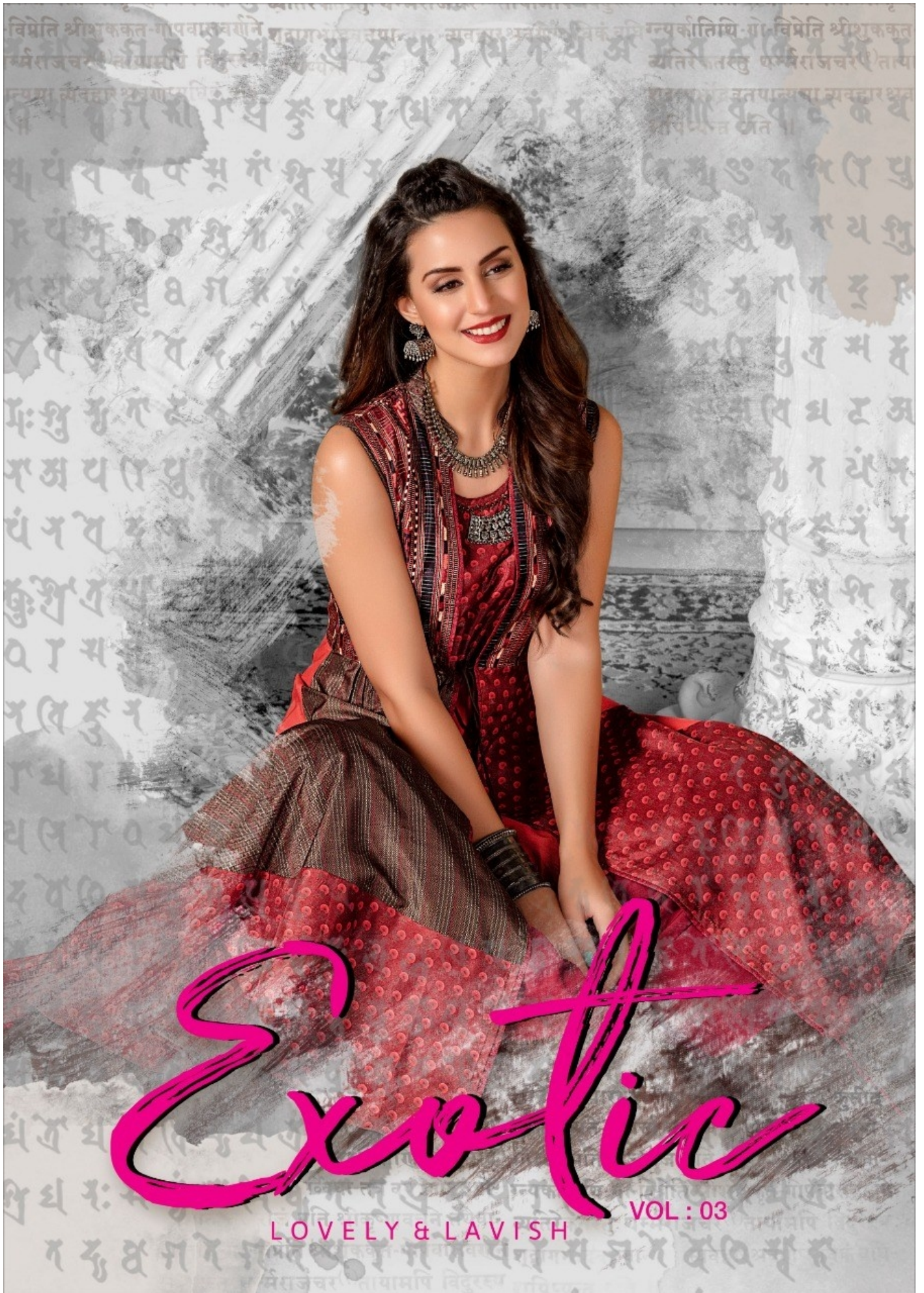
श्रीगुरुकृत-गोपवासवर्णिने
वचर^(१)तायामणि निवृत्त्य
अत्र द्वारश्रवणोपपत्तिं वधि-
ये गोरहृत् वाणिज्यं कुर्त्तव्यं
गुणित्वा तत्र वयं गोवृत्तयो-

श्रीयुक्त-गोपवासायने
पचर(तायामणि विदुः
यवहारश्रवणायिकी कवि-
ये मोरहप वाणिज्यं कुम्भिंद
रुनिवा तत्र वयं गोवृत्तयो-

S4UTM
SHIVALI



Exotic 302



LOVELY & LAVISH

VOL : 03